P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-II*October-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

उत्तर प्रदेश में संविद सरकारों की भूमिका (बहुजन समाज पार्टी के विशेष सन्दर्भ में)

राजवीर
प्रवक्ता,
राजनीति विज्ञान विभाग,
गाँधी फैज़–ए–आम कॉलेज,
शाहजहाँपुर, उ.प्र.

सारांश

संसदीय शासन व्यवस्था में राजनीतिक सत्ता का केन्द्र बिन्दु मंत्रिमण्डल होता है, जो अपने कार्यों के लिए सामूहिक रूप से विधानमण्डल के प्रति उत्तरदायी होता है। भारतीय लोकतंत्र संक्रमण के ऐसे दौर से गुजर रहा है जहाँ जमीनी सच्चाई देश को गठबंधन की राजनीति की ओर ढकेल रही है। सामान्य रूप से इन शब्दों के अर्थ परिस्थितिवश विशेष रूप से बनी सरकारों के सन्दर्भ में भिन्नता प्रकट करते हैं किन्तु ये सभी राजनीतिक शब्दावली के अनुसार आंग्ल भाषा के एक ही शब्द ''Coalition'' की ओर संकेत करते हैं। विधान सभा चुनाव, 1993 को दलीय स्थिति कुल उम्मीदवार 9065 तथा जीतने वाले उम्मीदवार 422 थे। इस चुनाव में कुल प्राप्त मत 52170442 थे। मुलायम सिंह यादव ने उत्तर प्रदेश में बसपा के सहयोग से मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण की। 01 जून, 1995 को मायावती ने गठबंधन सरकार आखिरी रास्ता दिखा दिया। मायावती ने पहली बार 3 जून, 1995 को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री पद का कार्यभार ग्रहण किया और इस पद पर 17 अक्टूबर, 1995 तक कार्य किया। उत्तर प्रदेश में विधान सभा चुनाव परिणाम 1996 की दलीय स्थिति के कुल उम्मीदवार 3309, जीतने वाले उम्मीदवार 415 थे, कुल प्राप्त मत 214712032 थे। 21 सितम्बर, 1997 को कल्याण सिंह ने उत्तर प्रदेश में भाजपा–बसपा गठबंधन सरकार का पदभार संभाला लेकिन चार सप्ताह बाद ही 19 अक्टूबर 1997 को कल्याण सिंह सरकार से बसपा ने अपना समर्थन वापस ले लिया। विधान सभा चुनाव परिणाम 2002 को दलीय स्थिति में कुल उम्मीदवार 5533 जीतने वाले उम्मीदवार 401 तथा कुल प्राप्त 53429581 थे। मायावती ने 3 मई, 2002 को तीसरी बार उत्तर प्रदेश की सत्ता संभाली। 25 अगस्त, 2003 को भारतीय जनता पार्टी के समर्थन वापसी के चलते यह प्रयास विफल हो गया। 28 अगस्त, 2003 को मायावती सरकार बर्खास्त कर और 29 अगस्त, 2003 को मुलायम सिंह यादव को पद गोपनीयता की विधिवत् शपथ दिला दी गयी।

मुख्य शब्द : गठबन्धन, राजनीतिक दल, समझौता, मंत्रिमंडल, संसदीय, बहुमत, स्पष्ट, चक्रव्यूह, संक्रमण, शासन व्यवस्था, सामाजिक परिवर्तन, उम्मदीवार, निर्वाचन, मत, कार्यभार।

प्रस्तावना

संसदीय शासन व्यवस्था में राजनीतिक सत्ता का केन्द्र बिन्दु मंत्रिमण्डल होता है, जो अपने कार्यों के लिए सामूहिक रूप से विधानमण्डल के प्रति उत्तरदायी होता है। मंत्रिमण्डल का स्वरूप उसका कार्य संचालन और प्रभावशीलता विधानमण्डल की दलीय स्थिति पर निर्भर करती हैं। इंग्लैण्ड की संसदीय परम्पराओं के अनुसार प्रत्येक दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त होता है, सामान्यता उसी दल के नेता को मंत्रिमंडल बनाने के लिए आमंत्रित किया जाता है। इस प्रकार बहुमत प्राप्त दल द्वारा गठित मंत्रिमंडल को सम दलीय (Homoginious) कहा जाता है।[1]

भारतीय लोकतंत्र संक्रमण के ऐसे दौर से गुजर रहा है जहाँ जमीनी सच्चाई देश को गठबंधन की राजनीति की ओर ढकेल रही है। पिछले कई दशकों से लगभग हर आम चुनाव के बाद विभिन्न दलों की मिली–जुली सरकार केन्द्र तथा राज्यों में निर्मित हो रही है, किसी भी एक राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त होता है, उसी की सरकार बनती है। परन्तु यदि किसी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं होता है तो अन्य दलों की सहायता से मिली–जुली सरकार बनती है, जिसे संयुक्त सरकार, गठबंधन सरकार या संविद सरकार, कई नामों से जाना जाता है।[2]

1991 में सम्पन्न उत्तर प्रदेश की विधान सभाचुनाव में से भाजपा को

221 सीटें हासिल हुईं। भाजपा प्रदेश में पहली बार अपने बल पर 24 जून, 1991 को सत्तारुढ़ हुई।[3] चुनाव नतीजे ने भाजपा के लखनऊ के जरिये दिल्ली के सिंहासन पर कब्जा करने के सपने चकना चूर कर दिये। साथ ही साथ कांग्रेस और जनता दल की उत्तर प्रदेश में वास्तविक ताकत को भी सामने ला दिया। भाजपा की सीटें 221 से घटकर 177 रह गयीं। कांग्रेस की 46 से घटकर 28 रह गयीं और जनता दल 92 से घटकर 27 पर आ गया। सपा–बसपा गठजोड़ (1993) ने 176 सीटें जीती (109 सपा और 67 बसपा) को मिलीं। यह संख्या विधान सभा में दोनों को मिलाकर 46 सीटों की चार गुनी थीं। गठजोड़ ने 17 सीटें भाजपा से छीनी, 37 सीटें जनता दल से और 18 सीटें कांग्रेस से। अगर पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अजीत सिंह के नेतृत्व वाला गठजोड़ जनता दल भाजपा का मुकाबला कर पाया होता तो भाजपा 177 सीटों से भी काफी कम सीटें जीतती।[4]

विधान सभा चुनाव परिणाम, 1993 की दलीय स्थिति[5]

दल का नाम	कुल उम्मीदवार	जीते	प्राप्त मत	मत का %
जनता दल	381	27	6171002	12.35
इंडियन नेशनल कांग्रेस	421	28	7528413	15.07
भाजपा	422	177	16637725	33.30
जनता पार्टी	302	–	–	–
सीपीआई	38	–	–	–
सीपीआईएम	18	–	–	–
बसपा	163	67	5552484	11.11
सपा	264	109	8906154	17ण्82
दूरदर्शी	499	–	–	–
निर्दलीय	8517	08	3384215	6.77
अन्य	110	06	1788454	03.38
योग	9065	422	52170442	100.00

मुलायम सिंह यादव ने उत्तर प्रदेश में बसपा के सहयोग से मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण की। सपा–बसपा सरकार ने शुरूआत अच्छे ढंग से की। सत्ता में आते ही उन्होंने परीक्षाओं में नकल रोकने का लाया गया दण्डात्मक कानून वायदे के मुताबिक रद्द कर दिया।[6] काशीराम ने 10 जुलाई, 1994 को दल–बदल विरोधी रैली करके पहली चेतावनी दी। पंचायत चुनावों और निगमों में मनोयन के मामलों में जब उन्हें कहीं का नहीं रखा गया तो कांशीराम ने लखनऊ में 24 अप्रैल, 1995 को सरकार गिराने की चेतावनी दी। 01 जून, 1995को काशीराम द्वारा हस्ताक्षरित पत्र राज्यपाल मोती लाल बोरा को सौंपकर मायावती ने गठबंधन सरकार को आखिरी रास्ता दिखा दिया।

भाजपाइयों के अनुसार उनका गंतव्य दलितों को साथ लेकर सीधे–सीधे यह राजनीतिक खेल खेला था, जिसमें एक सीमा तक भाजपा सफल भी हुई। मुलायम सिंह यादव को चुनाव में भले ही भाजपाई न हरा सके थे, पर विधान सभा में मायावती के सहयोग से उन्होंने सपा प्रमुख को परास्त कर दिया।[7]

मायावती ने पहली बार 3 जून, 1995 को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री का पदभार ग्रहण किया और इस पद पर 17 अक्टूबर, 1995 तक कार्य किया। उत्तर प्रदेश सरकार का यह साढ़े चार माह का कार्यकाल अपने आपमें ऐतिहासिक रहा। मायावती पर शुरूआत से ही इस तरह के आरोप लगते रहे थे कि वह अपने अनुयायियों और मनुवादी व्यवस्था की घोर विरोधी हैं। लेकिन मायावती के इन साढ़े चार माह के कार्यकाल में उत्तर प्रदेश का सवर्ण वर्ग बहुत ही चैन और सुख से रहा और मायावती ने अपने साढ़े चार माह के कार्यकाल में उत्तर प्रदेश को एकदम जंगलराज से विकासराज की तरफ ले जाने का कार्य किया। भारत के इतिहास में यह पहली बार किसी दलित महिला ने बाखूबी सत्ता संभाली और बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के सपने को साकार किया।[8]

बसपा–कांग्रेस गठबंधन का सवाल है तो इसका लाभ पूरी तरह कांग्रेस को मिला। बसपा का समूचा वोट कांग्रेस के पक्ष में चला गया, लेकिन कांग्रेस का वोट बँट गया। कांग्रेस का जो शेष दलित वोट था वह बसपा को मिला, लेकिन बाकी वोट अन्य पार्टियों में विभाजित हो गया। उत्तर प्रदेश में विधान सभा के चुनाव के लिए बसपा तालमेल करके पी.वी. नरसिम्हा राव ने संकटकाल से उबरने के लिए नई चाल चली। इस तरह राव ने एक तीर से दो शिकार किये। पहला यह था कि पार्टी में अपने विरोधियों को कुछ समय के लिए चक्रव्यूह में फंसा लिया। दूसरे बसपा के साथ गठबंधन का संयुक्त मोर्चे का प्रयास धरा रह गया। बसपा–कांग्रेस गठबंधन उत्तर प्रदेश तक ही सीमित रहा लेकिन बसपा अध्यक्ष कांशीराम ने अन्य राज्यों में ऐसे गठबंधनों की सम्भावना से इंकार नहीं किया।[9]

सन्दर्भ

उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव परिणाम, 1996 की दलीय स्थिति[10]

दल का नाम	कुल उम्मीदवार	जीते	प्राप्त मत	मत का %
जनता दल	54	07	1421528	2.6
इंडियन नेशनल कांग्रेस	126	33	4626663	8.35
भाजपा	414	174	1802828820	32.52
जनता पार्टी	31	–	73531	0.13
सीपीआई	15	01	327231	0.95
सीपीआईएम	11	04	424752	0.97
बसपा	299	67	10890716	19.84
सपा	281	110	12090716	21.80
समता पार्टी	09	02	221866	0.40
निर्दलीय	2032	13	3616820	6.52
कांग्रेस तिवारी	37	04	735327	1.33
योग	3309	415	214712032	95.41

21 मार्च, 1997 को मायावती ने उत्तर प्रदेश में दूसरी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। देश की आजादी के बाद ऐसा पहली बार हुआ कि किसी महिला ने उत्तर

प्रदेश जैसे बड़े राज्य की बागडोर संभाली। उत्तर प्रदेश में पचास वर्षों से बहुजन समाज के लोग दबे, कुचले समाज की तरह अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। मायावती ने सत्ता संभालते ही समाज के पिछड़े वर्गों की सत्ता में पूरी भागीदारी दी और आजादी के बाद ऐसा पहली बार हुआ जब प्रदेश के पिछड़े वर्ग के लोगों ने कैबिनेट मंत्री पद भार संभाला। उत्तर प्रदेश की सत्ता दूसरी बार संभालने के बाद मायावती ने सामाजिक परिवर्तन के लिए बहुजन समाज के आर्थिक विकास की तमाम योजनाऐं शुरू कीं। उत्तर प्रदेश में चली विकास की इस आंधी को लोगों ने स्वयं महसूस किया और यहाँ तक कहा मायावती का 6 माह का कार्यकाल 6 साल पर भी भारी पड़ा। इन 6 महीनों में सर्वाधिक विकास हुआ। इतिहास साक्षी है कि इन 6 महीनों में मायावती ने बहुजन समाज के महापुरुषों के नाम पर कई बड़ी योजनाओं का शुभारम्भ करके करोड़ों लोगों का दिल जीतने का काम किया।[11]

उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव परिणाम, 2002 की दलीय स्थिति[12]

दल का नाम	कुल उम्मीदवार	जीते	प्राप्त मत	मत का %
सपा	390	143	13586663	25.43
बसपा	402	98	12389120	23.19
भाजपा	319	88	10749755	20.12
कांग्रेस	402	25	4808168	9.00
राष्ट्रीय लोकदल	38	14	1332810	2.49
राक्रापा	335	04	1810164	3.39
अपना दल	227	03	1160683	2.17
जनता दल यू	16	02	313860	0.59
एबीएलटीसी	25	02	281608	0.53
सीपीआईएम	06	02	163462	0.37
लोकतांत्रिक पार्टी	130	01	383363	0.72
लोकजनशक्ति पार्टी	18	01	119099	0.60
राष्ट्रीय परिवर्तन दल	61	01	234239	0.93
एसजेपीआर	22	01	133539	0.25
सीपीआई	05	–	69648	0.13
निर्दलीय	2352	14	3922888	7.35
योग	**5533**	**401**	**53429581**	**100.00**

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल विष्णुकान्त शास्त्री ने एक भव्य समारोह में 3 मई, 2002 को बसपा की राष्ट्रीय महासचिव कु0 मायावती को मुख्यमंत्री के रूप में पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलायी। इसी के साथ भाजपा एवं बसपा के अन्य 19 मंत्रियों को भी शपथ ग्रहण करायी गयी और इसी के साथ 8 मार्च, 2002 से लगा राष्ट्रपति शासन समाप्त हो गया। मायावती ने 17 मई को सदन में अपना विश्वास मत हासिल कर दिया।[13]

मुख्यमंत्री जब 24 मई, 2003 से 12 जून, 2003 तक विदेश यात्रा के भ्रमण पर थीं तो उस समय उपयुक्त अवसर जानकर विपक्षी दल समाजवादी पार्टी, कांग्रेस, राष्ट्रीय लोकदल तथा राष्ट्रीय क्रान्ति पार्टी आदि विपक्षी राजनीतिक दलों के प्रमुख राजनेताओं ने 30 मई, 2003 को राजभवन जाकर प्रदेश राज्यपाल विष्णुकान्त शास्त्री को लोकदल के विधायक के नेता कोकव हमीद के माध्यम से राष्ट्रीय लोकदल का मायावती सरकार से अपना समर्थन वापसी का पत्र सौप दिया और मायावती सरकार अल्पमत में आ गयी।[14]

शोध का उद्देश्य

शोध का उद्देश्य प्रस्तावित शोध से सम्बन्धित स्रोतों का समग्र अध्ययन करने के पश्चात् इन स्रोतों से प्राप्त अध्ययन सामग्री की प्रमाणिकता तथा विश्वनीयता स्थापित करते हुए इनका प्रसांगिक तथा तार्किक ढंग से प्रयोग करने का हर सम्भव प्रयास किया। शोधार्थी द्वारा मनोयोग के साथ इस विषय से सम्बन्धित मूल्यवान सूचनाओं का संकलन का तथा प्रस्तावित शोध अवधि से सम्बन्धित उत्तर प्रदेश में सविद सरकारों की भूमिका (बहुजन समाज पार्टी के विशेष सन्दर्भ में) कार्यकाल, उनकी स्थिरता, दल बदल कानून, क्षेत्रीय, राजनीतिक दलों का विशेषकर बहुजन समाज पार्टी तथा अन्य क्रिया–कलापों का संवैधानिक एवं व्यवहारिक अध्ययन करने का प्रयास किया गया।

संकल्पना

विगत् कई दशकों से राजीतिक दलों में सरकारों का उत्थान व पतन का क्रम जारी रहने पर शोधार्थी ने उत्तर प्रदेश की राजनीतिक व्यवस्था को देखकर संविद या गठबंधन सरकार पर अनुसंधान करने की आवश्यकता को उपयुक्त समझा, जो उत्तर प्रदेश के लिए हितकर होगा।

निष्कर्ष

1990 के दशक में सामाजिक न्याय एवं बसपा के अभ्युदय के बाद भारतीय राजनीति में व्यापक राजनीतिक परिवर्तन देखा जा सकता है। दलित वोट जुड़ाव जहाँ बसपा के साथ वहीं कांग्रेस के साथ खुद को और पार्टी को भी बदला। व्यवहार, भाषा शैली, राजनीतिक मुद्दे, कार्यकर्ताओं के साथ और नये समाज को पार्टी से जोड़ने की मुहिम में बदलाव लाकर मायावती ने बहुजन समाज को सर्वजन में बदल दिया। मायावती ने भाईचारा समितियों और ब्राह्मण सम्मेलनों के द्वारा सत्ता से लम्बे समय से दूर ब्राह्मण समाज को अपनी ओर आकर्षित किया और सोशल इंजीनियरिंग के फार्मूले के तहत दलित–ब्राह्मण को जोड़ा।

सुझाव

गठबंधन चुनाव से पूर्व हो और शामिल सभी संयुक्त कार्यक्रम की घोषणा करे, अर्थात उनकी वैचारिक प्रतिबद्धताओं, नीतियों और उद्देश्यों का साझा कार्यक्रम जनता के सामने स्पष्ट हो, साथ ही वे उनकी सफलता का सामूहिक उत्तरदायित्व स्वीकार करें, निर्णय सभी दलों द्वारा लिये जाते हैं। कोई भी दल चाहे वह बड़ा और प्रभावी क्यों न हो, अपना एजेंडा दूसरे दलों पर थोपने का प्रयास न करे। गठबंधन के संचालन का दायित्व सबसे बड़े दल के साथ में हो, सर्वप्रथम अवसरवादिता का त्याग एवं नैतिकता का विकास होना चाहिए क्योंकि राजनीतिक दल कभी स्थायी नहीं हो सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. छुबे अभय कुमार, मुलायम सिंह यादव एक अध्ययन, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0,1997,पृ0 16.
2. सईद एस.एम., भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, सुलभ प्रकाशन, लखनऊ, 1998, पृ0 245.
3. झा डॉ. किरण, भारतीय राज व्यवस्था, नई दिल्ली, 1998, पृ0 435
4. यादव योगेन्द्र, पालिटिकल चेंज इन नार्थ इण्डिया, ई. पी.डब्ल्यू, 18 दिसम्बर, 1993
5. उत्तर प्रदेश विधान सभा सामान्य निर्वाचन आयोग, 1993 की रिपोर्ट।
6. नैमिशराय मोहनदास, बहुजन समाज, नीलकंठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृ0 75
7. वर्मा नरेन्द्र कुमार, सामाजिक एवं राजनीतिक क्रान्ति की महानायिका मायावती, प्रतिमा प्रकाशन, दिल्ली, 2007, पृ0 37.
8. वर्मा नरेन्द्र कुमार, सामाजिक एवं राजनीतिक क्रान्ति की महानायिका मायावती, प्रतिमा प्रकाशन, दिल्ली, 2007, पृ0 37–38.
9. इण्डिया टुडे, 15 अक्टूबर, 1996, पृ0 45.
10. उत्तर प्रदेश विधान सभा सामान्य निर्वाचन आयोग, 1916 की रिपोर्ट।
11. वर्मा नरेन्द्र कुमार, सामाजिक एवं राजनीतिक क्रान्ति की महानायिका मायावती, प्रतिमा प्रकाशन, दिल्ली, 2007, पृ0 38.
12. उत्तर प्रदेश विधान सभा सामान्य निर्वाचन आयोग, 2002 की रिपोर्ट।
13. वर्मा नरेन्द्र कुमार, सामाजिक एवं राजनीतिक क्रान्ति की महानायिका मायावती, प्रतिमा प्रकाशन, दिल्ली, 2007, पृ0 38–39.
14. बोस अजय, बहन जी एक राजनीतिक जीवनी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृ0 158–160.